कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

यतेमहि स्वराज्ये

website : www.pramanaresearchjournal.com

ISSN : 2249-2976

Impact Factor : 6.735

Pramāna

Research Journal

(Art, Literature, Humanity, Social Science, Commerce, Management, Law & Science Subjects)

(Indexed & Listed at :

Research Bib., Japan
(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))

(An International Peer Reviewed and Refereed Research Journal)

Year : 12
Issue : 45
Oct.-Dec. 2023
www.pramanaresearchjournal.com

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्

Acharya Academy, Bharat

ISO : 9001-2015

शोध–आलेखानुक्रम

Pramāna
International Refereed
& Peer Reviewed
Impact Factor : 6.735
Research Journal (ISSN : 2249-2976)
Year-12, Issue-45 (Oct.-Dec. 2023) (Page No. 110-115)

श्री रामलाल मोहता की हवेली, मोहता चौक–एक शाही महल

डॉ. रीतेश व्यास
प्राचार्य
सिस्टर निवेदिता कन्या महाविद्यालय
बीकानेर (राजस्थान)

शोध आलेख सार

श्री मोहता जी द्वारा बनवाई गई हवेली को श्री रामलाल जी मोहता, उनके पुत्र सूरजनारायण जी मोहता ने संजोए रखा। वर्तमान में श्री रामलाल जी के पौत्र श्री राजकुमार मोहता ने बहुत ही बेहतरीन तरीके से संरक्षित कर रखा है। आपका देश के बड़े शहरों में कपड़े का व्यवसाय है। श्री राजकुमार जी के अनुसार लगभग 150 साल से अधिक पुरानी यह इमारत हमारे पुरखों का प्रसाद स्वरूप है। आप इस हवेली को अपने पड़दादा द्वारा दिया गया अनुपम उपहार मानते है। यह हवेली लगभग 500 गज क्षेत्रफल में बनी है। तीन मंजिला इस हवेली में कुल नौ कमरे हैं, जिनमें कुछ कमरों में तो ऐसा काम हुआ है जिसके लिए मोहता परिवार को जितना साधुवाद दिया जाए कम होगा। हवेलियों के कमरों में हुआ भित्ति चित्रण कार्य बीकानेर की कला और वैभव को दर्शने वाला है।

मुख्य शब्द : हवेली, मोहता परिवार, कला और वैभव।

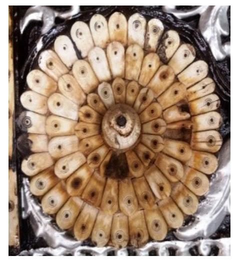
शहर का हृदय मोहता चौक में बसता है। इस चौक का इतिहास बड़ा ही गौरवशाली रहा है। यह चौक अपनी हवेलियों के कारण भी विख्यात है। इस चौक की अधिकांश हवेलियां मोहता परिवार द्वारा निर्मित हैं। चौक की सबसे आकर्षक, सुन्दर और सबसे अधिक संरक्षित हवेली श्री बलदेवदास जी की है। श्री मोहता जी द्वारा बनवाई गई इस हवेली को श्री रामलाल जी मोहता, उनके पुत्र सूरजनारायण जी मोहता ने संजोए रखा। वर्तमान में श्री रामलाल जी के पौत्र श्री राजकुमार मोहता ने बहुत ही बेहतरीन तरीके से संरक्षित कर रखा है। आपका देश के बड़े शहरों में कपड़े का व्यवसाय है। श्री राजकुमार जी के अनुसार लगभग 150 साल से अधिक पुरानी यह इमारत हमारे पुरखों का प्रसाद स्वरूप है। आप इस हवेली को अपने पड़दादा द्वारा दिया गया अनुपम उपहार मानते हैं। यह हवेली लगभग 500 गज क्षेत्रफल में बनी है। तीन मंजिला इस हवेली में कुल नौ कमरे हैं, जिनमें कुछ कमरों में तो ऐसा काम हुआ है जिसके लिए मोहता परिवार को जितना साधुवाद दिया जाए कम होगा। हवेलियों के कमरों में हुआ भित्ति चित्रण कार्य बीकानेर की कला और वैभव को दर्शाने वाला है। हवेली में स्वर्ण कलम का काम उस्ता कलाकारों ने किया है, जबकि माली समाज के लोग चलवें का काम किया था।





पूर्वाभिमुख हवेली का मुख्य द्वार भवन के एक दम किनारे पर अर्थात उत्तर-पूर्व के कोने पर स्थित है। हवेली नुक्कड़ पर स्थित है और पास में गली होने के कारण दो ओर से खुलती है, जिससे हवा और रोशनी की कोई समस्या नहीं है। कलात्मक झरोखों से हवेली का मुख मण्डल शोभायमान हो रहा है। विशाल चेहरा, उस पर बाहर की ओर झुके हुए उभारदार नक्काशीदार झरोखे, कलात्मक जालियां, छत की दीवारों पर जालीदार खुदाई इसकी सुन्दरता में चार चांद लगा रहे हैं। छः-सात सीढ़ियों के बाद एक भारी भरकम दरवाजा है जैसा हमें अन्य स्थानों पर भी मिलता है। इसमें भी अष्टकोण खुदे हैं, जिन पर उभारदार फूल बने हैं। चौखट





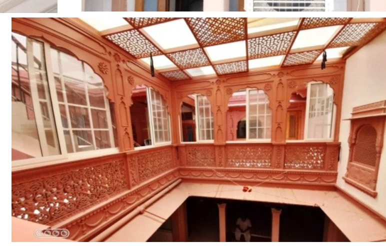
में हाथी दांत के सात फूल चक्र तोरण बने है, जिनके चारों ओर मोर पंख बनाए गए हैं। इन पर सामान्यतः नजर नहीं पड़ती लेकिन उनका अंकन इतना सुन्दर हुआ है कि आपकी नजर पड़ती ही है। दरवाजे पर कहीं-कहीं सुनहरा रंग भी हुआ है। भीतर जाने पर पूरी हवेली हेरीटेज लुक ही दे रही है। खुला आंगन, आंगन में ही मन्दिर, सीढ़ियां, परींडा आदि है। आंगन आज भी पहले की तरह खुला है कोई जाली या जंगला नहीं हैं। धूप से बचाव के लिए जरूर एक शीट लगाई गई है लेकिन इससे हवेली के मूल स्वरूप में काई बदलाव नहीं आया है। आंगन स्तम्भों पर आधारित है जिसमें तोड़े और मेहराब लकड़ी के बने हैं। इनकी आभा देखी जा सकती है। बाहरी चमक और उनकी दृढ़ता का आभास लगाया जा सकता है।











स्तम्भाधारित खुला आंगन

आंगन में अब नई रसोई बना दी गई है, लेकिन परम्परागत हवेली स्थापत्य में जहां पहले रसोई थी वहां एक टेबल लगा उसे आधुनिक डाईनिंग हॉल का रूप दिया गया है। इसकी छत पूर्ववत ही है और एक नई अलमीरा लगी है। टेबल के पास की दीवार में एक पेंटिग बनी है जिसमें भगवान राम अपने तीनों भाईयों के साथ भोजन कर रहे हैं। यह मोहता परिवार के संयुक्त परिवार के प्रति आस्था का प्रमाण है। श्री राजकुमार

जी ने इसे एक फ्रेम में सुरक्षित करवा दिया है। इसी क्रम में एक चित्रण और है जिसमें महाराज दशरथ चारों पुत्रों के साथ खेल रहे हैं। ऐसा चित्रण अब तक के सर्वे में कहीं भी नहीं देखा गया है।





हवेली के आंगन में छोटा मन्दिर भी है। यह इतना छोटा है कि एक व्यक्ति के बैठने के बाद दूसरा नहीं बैठ सकता। मन्दिर में तीन ओर की दीवारों पर सुन्दर फलों की टोकरियां बनी हैं। ठीक सामने सालिगराम और ठाकुर जी की सेवा है जिसके लिए पंडित जी आते हैं और विधि-विधान से पूजा करते हैं। मन्दिर में श्री कृष्ण की रासलीला का सुन्दर चित्रांकन हुआ है। मन्दिर भी इस हवेली की शोभा है। इसमें कुछ पुनर्निर्माण का कार्य भी हुआ है। मन्दिर के बाहर की दीवारों पर ब्रिटिश कालीन टाईल्स लगी है, जिनमें उभार दार बंदनमाल बने है। इस प्रकार की टाईल्स के बिना हवेलियों की दीवारों को अधूरा माना जाता है। एक प्रकार से ये दीवारों की आभा और सुन्दरता का पर्याय है।

श्री राजकुमार जी ने बड़े ही मनोभाव से बताया कि मैने अपने पुरखों की इस विरासत को संवारने के लिए कुछ बदलाव अवश्य किए हैं, लेकिन उसमें कोई मूलभूत फेरबदल नहीं किया है। जो बदलाव है वह सिर्फ आंगन के फर्श में ही है। जैसा उन्होंने बताया कि हवेली में कुल नौ कमरे हैं और उनमें कुछ कमरे ऐसे हैं जिनकी खुबसूरती इस हवेली को सबसे अलग बनाती है। वह है दीवानाखाना और ऊपर का मॉल। सामान्य रूप से हवेली के एक ओर दीवानखाना होता है और कई स्थानों पर दोनों ओर भी मिलता है। इस हवेली में भी दरवाजे के दाईं ओर दीवानखाना है जिसका प्रवेश अब हवेली के अन्दर से है। जो अन्य हवेलियों के दीवानखाने से कई गुना बड़ा और आकर्षक है। यह कला के लिहाज से हवेली की जान है। दीवानखाने की दीवारों के प्रत्येक कोने में फूल-पत्तियां, ताजा गुलाब, नाजुक बैंले, कोमल लताएं और रंग बिरंगे गुलदानों पर बैठे तोते आकर्षण पैदा कर रहे हैं। यह कलाकारी बीकानेर की कला का बेहतरीन नमूना है। दीवानखाने में प्रवेश करने के बाद ऐसा लगता है मानों आप जूनागढ़ के किसी कक्ष में हैं, जिसमें राजाओं ने अपने शौक के लिए ऐसा काम करवाया है। वास्तव में इस प्रकार का हॉल देखना मन को सुकून देने वाला था। मैने स्वयं इसे महसूस किया।







दीवानखाने का भित्तिचित्रण



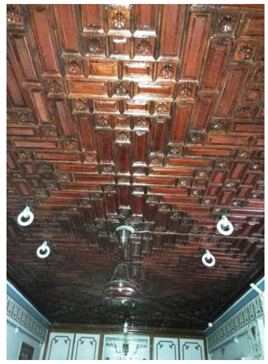
दीवानखाने का भित्तिचित्रण

दीवानखाने में पत्थर के कुल छः स्तम्भ है और प्रत्येक पर स्वर्ण कलम और उस्ता काम से एक-एक दर्पण अर्थात कांच लगा है। साथ ही तकियां भी है जिनके फलक कांच के बने हैं। इनके चारों ओर कलम के काम से इन्हें आकर्षक बनाया गया है। सभी तकियों पर कई तरह के फलों से भरी टोकरियां बनी है जिनमें मौसम के अनुरूप फल रखे हैं। इनमें कई तरह के पक्षियों का भी अंकन है। छत लकड़ी की है और उसकी चमक देखी जा सकती है। छत की बीम में बादलों के बीच सूर्य का भी सुन्दर चित्रण छत की आभा बढ़ा रहा है। छत में बर्मन और अखरोट की लकड़ी का सम्मिश्रण है जिससे उसकी चमक आज भी वैसी ही है जैसी उस समय थी। दीवानखाने के भीतर एक छोटा कमरा और है। उसकी छत पर नीले रंग से बादलों का अंकन भी है। जिसे वर्तमान में ऑफिस का रूप दिया है। नीले बादल, पानी से भरे हुए हैं और उनमें बिजली में चमक रही है। यह बीकानेर की आलागीला पद्धति में हुई चित्रण शैली है। लाल, पीले, हरे और नीले रंग की प्रधानता दिख रही है। इसके फर्श में इटली, जापान और चीन की टाइले जड़ी हैं। दीवानखाने की हर दीवार पर गुलाब के फूलों की महक आज भी महसूस की जा सकती है। दीवानखाना करीब 50 फीट लम्बा और 10 फीट चौड़ा है।



छत का बीम

हवेली तीन मंजिला है जिसमें दूसरी मंजिल पर भी कुछ कमरे बने है। सीढ़ियां चढ़ते ही एक कमरा है जिसमें पत्थर की नक्काशी युक्त झरोखा आकर्षण पैदा करता है। आश्चर्य यह है कि अर्द्धचंद्राकार झरोखा भीतर की ओर है जबकि ऐसे झरोखे हवेली के बाहर की ओर होते हैं। इसकी खास बात यह है कि इसमें कहीं पर भी पत्थर का जोड़ नहीं है। इस पर फूलों और पत्तियों की सुन्दर नक्काशी हुई है। झरोखे से पूरे चौक का अवलोकन किया जा सकता है। इसकी छत भी लकड़ी की ही बनी है, लेकिन नीचे के दीवानखाने से एकदम अलग है। चौकोर डिजाईन बनाने के लिए लम्बी-लम्बी पट्टियों का प्रयोग हुआ है। इसमें अखरोट का बुरादा मिला है, जिससे छत में एक अलग ही चमक देखी जा सकती है। ये इस हवेली की शान में और अभिवृद्धि कर रही है। फर्श शट्कोणीय लाल, काले और सफेद रंग की टाईल्स से बना है। इन्हे फूल जैसा आकार दिया गया है, जिससे फर्श अत्यंत ही सुन्दर लग रहा है।


झरोखा, छत व स्तम्भ

हवेली की तीसरी मंजिल पर मॉल (हॉल) भी अत्यंत सुन्दर व दर्शनीय है। ऐसा हॉल बीकानेर में अब तक नहीं देखा गया है। मॉल की छत लकड़ी की पट्टियों से आच्छादित है। कमरे की दीवारें भी रेखीय कोणों से आच्छादित हैं। हवेली की छत में एक कोने में बना ये मॉल उत्सुकता पैदा कर रहा था। करीब 20गुना20 का यह मॉल शाही शयन कक्ष के रूप में स्थान रखता हैं। श्री मोहता जी के अनुसार शादी के बाद की पहली रात के लिए इसकी विशेष डिमांड रहती है। इसकी खिड़किया सड़क की ओर खुलती हैं।




दीवार और फर्श की टाईल्स

मॉल की छत पूरी तरह लकड़ी की ही बनी है जिसके बीच में 16 पत्तियों का एक कांच का फूल बना है। फूल के किनारे सोने की परत चढ़ी है। यह फूल स्वर्ण जैसा ही लग रहा है। फूल के किनारों पर आठ कोणों का एक फूल और बना है जिससे इसकी आभा और भी बढ़ गई है। इस फूल के चार कोनों पर परियों का अंकन है। अधिकांशत: ऐसा अंकन छत के चार कोनों पर ही होता है। छत के किनारों को भी फूलों की लम्बी क्यारी से सुशोभित किया गया है। ऐसा अंकन अभी तक के सर्वे में कहीं भी नहीं मिला है। लाल, पीले, नीले और हरे रंग के मिश्रण ने छत की आभा को और भी बढ़ा दिया है। पूरी छत सुन्दर संयोजन और प्रभाव लिए हुए है। छत के किनारों में जो कांच लगे हैं उनका भी प्रभाव दृष्टिगत होता है। उनको इस तरह से जड़ना और लम्बे समय तक लगे रहना वास्तव में उस दौर की कला का प्रभाव ही हो सकता है।




मॉल की छत का चित्रण

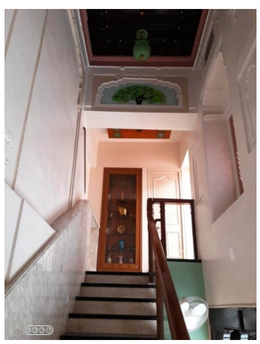




मॉल की छत के किनारों पर लगे कांच और स्वर्ण बर्क और वंदनमाल

हवेली में बनी सीढ़ियां पहली मंजिल में नई बना दी गई हैं। दूसरी और ऊपरी छत पर जाने वाली सीढ़ियां दुलमेरा पत्थर की ही बनी हुई है। सीढ़ियां सुव्यवस्थित और सुगम है। यद्यपि एक समय एक ही व्यक्ति चढ़ सकता है, फिर भी सुगम है। पहली मंजिल की सीढ़ियों में इटेलियन मार्बल लगा देने से वह नई हो गई है और उसमें कांच की रैलिंग लगा दी गई है। इन सीढ़ियों की ऊंचाई इतनी है कि वे अब भी आकर्षक है और ऊपरी हिस्सा यानी छत लकड़ी की ही है जिसमें आकर्षक लाइट लगी हैं और चमक बरकरार है।

हवेली की दूसरी मंजिल के कमरों और दरवाजों में कोई बदलाव नहीं किया गया है वे वैसे ही हैं। छत से आंगन का दृश्य भी आकर्षक हैं, क्योंकि पत्थर के तकियों से उसकी आभा अब भी बरकरार है। कुल मिलाकर यह हवेली मध्यकालीन कला और आधुनिकता का बेजोड़ समिश्रण है। स्थापत्यक विशेशताओं में मुगल और राजपूती कला के प्रमाण स्पश्ट रूप से दृष्टिगोचर हो रहे हैं, जिससे यह हवेली कुछ स्थानों पर अपने मूल स्वरूप में न होने के बाद भी बेहतरीन लग रही है। इसे संरक्षित रखने के लिए श्री राजकुमार जी को साधुवाद।







सीढ़ियां









